Bacchan मधुशाला

Au cabaret

1.

अपने युग में सबको अनुपम ज्ञात हुई अपनी हाला,
अपने युग में सबको अद्‌भुत ज्ञात हुआ अपना प्याला,
फिर भी वृद्धों से जब पूछा एक यही उत्तर पाया –
अब न रहे वे पीनेवाले, अब ज रही वह मधुशाला !

2

मदिरालय जाने को घर से चलता है पीनेवाला,
'किस पथ से जाऊँ?' असमंजस में है वह भोलाभाला;
अलग-अलग पथ वताते सब पर मैं यह वतलाता हूँ –
'राह पकड़ तू चला चल, पा जायेगा मधुशाला ।'

3

धर्म-ग्रन्थ सब जला चुकी है जिसके अन्तर की ज्वाला,
मन्दिर, मस्जिद, गिर्जे – सब को तोड़ चुका जो मतवाला,
पण्डित, मोमिम, पादरियों के फन्दों को जो काट चुका,
कर सकती है आज उसी का स्वागत मेरी मधुशाला ।

4

बजी न मन्दिर में घड़ियाली, चढ़ी न प्रतिमा पर माला,
बैठा अपने भवन मुअज़्ज़िन देकर मस्जिद में ताला,
लुटे खजाने नरपतियों के गिरीं गढ़ों की दिवारें;
रहे मुबारक पीनेवाले, खुली रहे यह मधुशाला ।

5

एक बरस में एक बार ही जगती होली की ज्वाला,
एक बार ही लगती बाज़ी, जलती दीपों की माला;
दुनियावालो, किन्तु, किसी दिन आ मदिरालय में देखो,
दिन को होली, रात दिवाली, रोज़ मनाती मधुशाला ।

6

मुसल्मान औ' हिन्दू हैं दो, एक, मगर, उसका प्याला,
एक, मगर, उनका मदिरालय, एक, मगर, उनकी हाला;
दोनों रहते एक न जब तक मस्जिद-मन्दिर में जाते;
बैर बढ़ाते मस्जिद-मन्दिर, मेल कराती मधुशाला ।

7

यम आयेगा साक़ी बनकर साथ लिये काकी हाला;
पी न होश में फिर आयेगा, सुरा-विसुध यह मतवाला;
यज अन्तिम बेहोशी, अन्तिम साक़ी, अन्तिम प्याला है;
पथिक, प्यार से पीना इसको, फिर न मिलेगी मधुशाला ।

8

मेरे अधरों पर हो अन्तिम बस्तु न तुलसी-दल, प्याला,
मेरी जिह्वा पर हो अन्तिम वस्तु न गंगाजल, हाला,
मेरे शव के पीछे चलनेवालो, याद इसे रखना –
'राम नाम है सत्य' न कहना, कहना 'सच्ची मधुशाला ।'

मेरे शव पर वह रोये, हो जिसके आँसू में हाला,
आह भर वह, जो हो सुरभित मदिरा पीकर मतवाला,
दें मुझको वे कन्धा जिसके पद मद-डगमग होते हों,
और जलूँ उस ठौर, जहां पर कभी रही मधुशाला ।

II. परिशिष्ट

रुबाई १

स्वयं नहीं पीता, औरों को किन्तु पिला देता हाला,
स्वयं नहीं छूता, औरों को पर पकड़ा देता प्याला,
पर – उपदेश-कुशल बहुतेरों से मैंने यह सीखा है,
स्वयं नहीं जाता, औरों को पहुँचा देता मधुशाला ।

रुबाई २

मैं कायस्थ कुलाद्भव मेरे पुरखों ने इतना ढाला,
मेरे मन के लोहू में है पचहत्तर प्रतिशत हाला,
पुश्तैनी अधिकार मुझे है मदिरालय के आँगन पर;
मेरे दादों-परदादों के हाथ बिकी थी मधुशाला ।

रुबाई ३

बहुतों के सिर चार दिनों तक चढ़कर उतर गयी हाला,
बहुतों के हाथों में दो दिन छलक-झलक रीता प्याला,
पर बढ़ती तासीर सुरा की साथ समय के, इससे ही,
और पुनानी होकर मेरी और नशीली मधुशाला ।

रुबाई ४

पितृ पक्ष में, पुत्र, उठाना अर्घ्य न कर में, पर प्याला,
बैठ कहीं पर जाना गंगा-सागर में भरकर हाला,
किसी जगह की मिट्टी भीगे, तृप्ति मुझे मिल जायेगी,
तर्पण अर्पण करना मुझको पढ़-पढ़ करके 'मधुशाला' ।

सोन मछरी

सत्यज्य मत्स्यरूपं सा दिव्यं रूपमवाप्य च – महाभारत १ ६३ ६६
(स्त्री-पुरषों के दो दल बनाकर सहगान के लिए: उत्तर प्रदेश की एक लोकधुन पर आधारित किसे 'ढिंढिया' कहते हैं)

स्त्री

जाओ, लाओ, पिया, नदिया से सोन मछरी।
पिया, सोन मछरी, पिया, सोन मछरी ।
जाओ, लाओ, पिया, नदिया से सोन मछरी।
उसकी हैं नीलम की आंखें,
हीरे-पन्ने की हैं पांखें,

वह मुख से उगलती है मोती की लरी ।
पिया, सोन मछरी, पिया मोती की लरी ।
जाओ, लाओ, पिया, नदिया से सोन मछरी।

पुरष

सीता ने सुबरन मृग मांगा,
उनका सुख लेकर वह भागा,
बस रह गयी नयनों में आँसू की लरी ।
रानी, आँसू की लरी, रानी, आँसू की लरी ।
रानी, मत मांगो नदिया की सोन मछरी ।

श्त्री

जाओ, लाओ, पिया, नदिया से सोन मछरी।
पिया, सोन मछरी, पिया, सोन मछरी ।
जाओ, लाओ, पिया, नदिया से सोन मछरी।
पिया डोंगी ले सिधारे,
मैं खड़ी रही किनारे,
पिया लौटे लेके बगल में सोने की परी ।
पिया, सोने की परी, नहीं सोन मछरी ।
पिया, सोन मछरी, नहीं सोने की परी ।

पुरष

मैंने बंसी जल में डाली,
देखी होती बात निराली,
छूकर सोन मछरी हुई सोने की परी ।
रानी, सोने की परी, रानी, सोने की परी ।
छूकर सोन मछरी की हुई सोने की परी ।
जाओ, लाओ, पिया, नदिया से सोन मछरी। (२)
जाओ, लाओ, पिया, नदिया से सोन मछरी।

स्त्री

पिया परी अपनाये,
हुए अपने पराये,
हाय ! मछरी जो मांगी, कैसी बुरी थी घरी !
कैसी बुरी थी घरी ! कैसी बुरी थी घरी !
सोन मछरी जो मांगी, कैसी बुरी थी घरी !

जो है कंचन का भरमाया,
उसने किसका प्यार निभाया,
मैंने अपना बदला पाया,
मांगी मोती की लरी, पायी आँसू की लरी ।
पिया, आँसू की लरी, पिया, आँसू की लरी ।
मांगी मोती की लरी, पायी आँसू की लरी .

जाओ, लाओ, पिया, नदिया से सोन मछरी ।
जाओ, लाओ, पिया, नदिया से सोन मछरी ।
पिया सोन मछरी, पिया, सोन मछरी ।
जाओ, लाओ, पिया, नदिया से सोन मछरी।